ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 67

सहयोग शुल्क : रु. 1 / जुलाई : 2022

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

शिक्षा की ऊंचाईओं को छू रहे दिव्यांग बच्चें
देश के विकास की नींव का मजबूत हिस्सा है ।
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

शिक्षा में बढ़ रही दिव्यांगों की अप्रतिम
सहभागिता देश के विकास में महत्वपूर्ण है ।
- प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल-पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटी से असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाणपत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाणपत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाणपत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

वर्तमान समय में समग्र विश्व में भारत का दबदबा बढ़ रहा है । वैश्विक संगठनों में भारत का प्रतिनिधित्व और उसके मत का महत्व बढ़ा है । माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की वैश्विक कूटनीति के चलते आज दुनिया के सारे राष्ट्र नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लोहा मानते है । विश्व के किसी भी देश में मोदी जाते हैं तो दुनिया के सुपर पावर देश के नेता की तरह उनका स्वागत और सम्मान किया जाता है ।

हाल ही में जर्मनी में हुए जी-7 देशों की मीटिंग के एक फोटो सेशन में हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी केनेडा के प्रधान मंत्री के साथ बात कर रहे थे उसी समय अमेरिका के राष्ट्रप्रमुख जो बाइडन ने सामने से चलकर नरेन्द्र मोदी के कंधे पर हाथ रखकर उनका अभिवादन किया । सारे न्यूज चेनल और सोशियल मीडिया में यह वीडियो काफि लोकप्रिय हो रहा है । लोग इस पूरे घटनाक्रम को विश्व में भारत के बढ़ते महत्व और हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता मानकर खुद को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं । हमारे प्रधानमंत्री श्री ने विश्व के देशों का केवल प्रवास नहीं किया है किंतु उस देश के साथ हमारे देश के संबंधों को मजबूत किया है और वहां रहनेवाले भारतीय समुदायों को भी भारत की ओर आकर्षित किया है । जब भी किसी देशों के बीच किसी बात को लेकर संघर्ष होता है तो इस में भारत का क्या मत है यह पूरी दुनिया जानना चाहती है । युक्रेन और रशिया के बीच चल रहे युद्ध में केवल नरेन्द्र मोदी ही ऐसे नेता थे जिन की बात को दोनों देशों के राष्ट्रप्रमुखों ने सम्मान के साथ सुना था ।

भारत की विदेशनीति और अन्य देशों के साथ हमारे संबंधोने देश को आर्थिक, सामाजिक, व्यापारिक और हर क्षेत्र में विकास प्रदान किया है और महत्व को बढ़ाया है ।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जुलाई - 2022, पृष्ठ संख्या - 16

वर्ष - 6 अंक - 67

✦ प्रेरणास्त्रोत एवं संपादक ✦

संत श्री ॐऋषि प्रितेशभाई

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

नयी पहल का स्वागत और अभिनंदन । अहमदाबाद से शुरु हुई यह सेवा अब पूरे राज्य में 50 कारों के साथ शुरु होगी । दिव्यांगो के लिए रेम्पवाली कार सेवा शुरु हुई, किसी की भी मदद के बिना व्हिलचेयर के साथ कार में बैठकर सवारी का आनंद ले पाएंगे ।

दिव्यांग व्यक्ति व्हिलचेयर के साथ ही कार में बैठकर गुम सके इसलिए अखिल हिन्दुस्तानी दिव्यांग संगठन ने अहमदाबाद में व्हिलचेर सुलभ कार सेवा का प्रारंभ किया है । गुजरात में पहली बार शुरु हुई ईस कार की विशेषता यह है कि उसमें रेम्प बनाये गये हैं । रेम्प के कारण अब दिव्यांग व्यक्ति किसी की भी मदद के बिना अपनी व्हिलचेयर के साथ सीधे कार में बैठ सकते हैं ।

इस सेवा के बारे में अखिल हिन्दुस्तानी दिव्यांग संगठन के प्रमुख समीर कक्कड बताते हैं कि, दिव्यांगों के लिए आज तक व्हिलचेयर के अलावा अन्य कोइ परिवहन सुविधा तैयार नहीं की गई हैं । किसी दिव्यांग को अगर हॉस्पिटल ले जाना हो तो उन्हें उठाकर ही एम्ब्युलन्स तक ले जाना पडता है । गुजरात में यह पहली बार रेम्प वाली कार सेवा की शुरुआत की गई है ।

वोइस टू दिव्यांग

अहमदाबाद में 1 कार के साथ शुरु की गई यह सेवा अब 50 कारों के साथ पूरे राज्य में शुरु की जाएगी । इस सेवा से अब कोइ भी दिव्यांग व्यक्ति व्हिलचेयर पर बैठकर ही रेम्प की मदद से सीधे कार में बैठ पाएंगे । इस सेवा के लिए 2 घंटे के लिए 400 रुपए चुकाने होंगे । 400 रुपए का यह चार्ज ड्राइवर की पगार और पट्रोल खर्च आदि को ध्यान में रखकर तय किया गया है ।

इस कार में दिव्यांग व्यक्ति मुसाफरी करनेवाले हैं इसे ध्यान में रखकर कार में ऑक्सिजन सिलिंडर की सुविधा भी रखी गई है । कार जी.पी.एस सुविधा से सज्ज हैं । साथ ही कार में पैसेन्जर के लिए नाश्ता, पानी की बोतल, मोबाइल चार्जर, व्हिलचेयर. फेस मास्क और सेनेटाइझर जैसी सारी सुविधाएँ भी रखी गई है ।

10वीं और 12 वीं गुजरात बॉर्ड के एक्जाम में मैदान मारने वाले दिव्यांग छात्र

चलने और लिखने में असमर्थ स्मित ने आसमान छू लिया....

स्मित....चलने और लिखने में असमर्थ है फिर भी राइटर की सहायता से 12 कॉमर्स के एक्जाम में 99.97 पी.आर प्राप्त किया ।

राजकोट का 12वीं कॉमर्स की छात्र स्मित चांगेला बचपन से ही न्यूरोपेथी की असाध्य बीमारी से ग्रस्त है । चलने और लिखने जैसे कई कार्य करने में स्मित असमर्थ है लेकिन 12 वीं के बॉर्ड एक्जाम के परिणामों में उसने आसमान को छूनेवाली सिद्धि प्राप्त कर सबको चौंका दिया है । 12 वीं के बॉर्ड एक्जाम में स्मित चांगलाने 99.97 पी.आर और 95 प्रतिशत मार्क्स प्राप्त किए हैं । स्मित हलनचलन नहीं कर सकता, लिख नहीं सकता 12वीं बॉर्ड के एक्जाम में उसे राइटर की सहायता दी गई थी, उसने अपने तेज दिमाग के चलते बॉर्ड के एक्जाम में श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त किया है ।

स्मित केवल तेजस्वी छात्र ही नहीं है साथ ही साथ बिजनेस में भी तेज है । अपनी माता के साथ मिलकर वह ऑनलाइन प्रोडक्ट की बीक्री का काम करता है ।हाथ-पग से कार्य करने में असमर्थ होने के बावझूद उसने कभी हार नहीं मानी । वह अपनी नाक की चोंच से मोबाइल में टाइपींग कर ऑनलाइन ऑर्डर लेता है और डिलवरी भी करवा देता है ।

स्मित चांगेला बचपन से ही न्यूरोपेथी नामक बीमारी से ग्रस्त है लेकिन उसने आत्मनिर्भर बनने की जिद ठान ली है । आगे चलकर वह जी.पी.एस.सी और यु.पी.एस.सी के एक्जाम पास कर आइ.ए.एस अफ्सर बनना चाहता है ।

स्नेहा...अकस्मात में अपने हाथ गँवाने के बाद भी स्नेहा का हौसला बूलंद है ।

हालोल की स्नेहा राठवा वीजशॉक के कारण अपने दोनों हाथ गँवा चूकी है । दोनों हाथ गँवाने के बाद भी मायूस न होकर उसने अपना हौसला बूलंद रखा और 12वीं के बॉर्ड एक्जाम में 91.07 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपने परिवार के साथ साथ पूरे शहर को गौरवान्वित किया है । स्नेहा डिसेबल वेलफेर ट्रस्ट ऑफ इन्डिया के द्वारा संचालित स्कूल की छात्रा है ।

आंखे गंवाने के बाद भी पढ़ने की आरझू को कायम रखती आरझू ।

पाटण जिले के सिद्धपुर के काकोशी गाँव की प्रज्ञाचक्षु छात्रा आरझू इकबालभाई मनसूरी ने 10 वीं बॉर्ड के एक्जाम में ए.1 ग्रेड प्राप्त कर पूरे जिले के टोप 10 छात्रों में सातवां स्थान प्राप्त किया है । आँखो में परदे की खामी के कारण धीरे धीरे उसको पूरी तरह से दिखना बंद हो गया । शिक्षकों द्वारा तैयार करवाएं नोट्स उसकी मां उसे पढ़ाकर सुनाती थी, तेज दिमाग के कारण उसे अच्छी तरह से सब याद रह गया था । राइटर की सहायता से बॉर्ड की एक्जाम देनेवाली आरझूने अपनी पढ़ने की आरझू को कायम रखते हुए यह सिद्धि प्राप्त कर अन्य छात्रों को भी प्रेरणा दी है ।

हंदवाडा का परवेज रोज एक पैर से 2 किलोमीटर चलकर स्कूल जाता है ।

पढ़ाई का जूनून जम्मू कश्मीर के हंदवाडा के 14 वर्षीय परवेज एहमद को एक पैर के बावजूद 2 किलोमीटर चलवाता है । 2 साल की उम्र में अपना एक पैर गंवानेवाले परवेज का सिर्फ एक ही पैर है । परवेज पढलिखकर अपने जीवन में कुछ बनना चाहता है । लेकिन पढ़ाई के लिए उसे अपने गाँव से दूर 2 किलोमीटर दूर तक अपने एक ही पैर से चलकर जाना पडता है । खराब रास्तों के कारण परवेज व्हिलचेयर लेकर स्कूल नहीं जा पाता । इतनी मुश्किलों के बाद भी परवेज स्कूल में सारे खेलों में हिस्सा लेता है । परवेज के पिता मजदूर होने के कारण पैसों की कमी के चलते परवेज के लिए कृत्रिम पैर नहीं खरीद पा रहे हैं, लेकिन परवेज का बूलंद हौसला उसे हररोज एक पैर के सहारे भी 2 किलोमीटर दूर स्कूल तक पहूंचा देता है...सलाम है परवेज के हौसले को...

एक पैर कृत्रिम होने के बाद भी एवरेस्ट की चोटियों पर तिरंगा लहराती अरुणिमा सिन्हा एक अनोखी मिसाल

भारत की राष्ट्रीय स्तर की पूर्व वॉलीबॉल खिलाडी और माउंट एवरेस्ट सर करनेवाली पहली भारतीय दिव्यांग अरुणिमा सिन्हा की कहानी आज पूरा भारत जानता है ।1988 में उत्तरप्रदेश के सुलतानपुर में जन्मी अरुणिमा को बचपन से ही खेलों में विशेष रुचि थी । अरुणिमा सिन्हा नेशनल वॉलीबॉल प्लेयर थी । 11 अप्रैल 2011 को पद्मावती एक्सप्रेस से लखनउ जा रही अरुणिमा के साथ घटित घटना ने उनका पूरा जीवन ही बदल दिया । वह जिस ट्रेन से लखनउ जा रही थी उसमें राते को करीब एक बजे कुछ अपराधी भी ट्रेन के डिब्बो में दाखिल हुए । अरुणिमा सिन्हा को अकेला देखकर उन गुंडो ने उनके गले से सोने की चेन खींचने की कोशिश की । लेकिन उन गुडों की इस कोशिश का अरुणिमा ने जमकर विरोध किया । गुंडोने अरुणिमा को बरेली के पास चलती हुई ट्रेन से नीचे फेंक दिया । ट्रेन से नीचे फेंकी गई अरुणिमा का बांया पैर पटरियों के बीच आ जाने से पूरी तरह कट गया । पूरी रात अरुणिमा के पैर पर से 40-50 ट्रेनें गुजर गई वह पूरी रात इस भयावह दर्द से चीखती चिल्लाती रही, लेकिन उस वक्त उनको बचानेवाला वहाँ कोई नहीं था । अरुणिमा इस भयावह पीडा और दर्द के बीच जीवन की आस खोती जा रही थी लेकिन किस्मत को यह मंजूर नहीं था । लोगों के अरुणिमा के अकस्मात के बारे में पता चलते ही तुरंत उसे दिल्ली के एइम्स में भर्ती करवाया गया । हॉस्पिटल में अरुणिमा जिंदगी और मौत के बीच चार महिने तक जंग लड रही थी । इस जंग में अरुणिमा के बूलंद हौसले की जीत हुई । वक्त बीतते अरुणिमा के बायें पैर में कृत्रिम पैर लगाया गया ।

परिवार और रिश्तेदारों की नजर में अरुणिमा एक बेचारी और विकलांग थी लेकिन अरुणिमा ने अपने बूलंद हौसलों को कभी कमजोर नहीं होने दिया । वह किसी के भी आगे बेबस, लाचार और बेचारी नहीं बनना चाहती थी । **"मंजिल मिल ही जाएगी भटकते हुए ही सही, गुमराह तो वो हैं जो घर से निकले ही नहीं ।"**

एक पैर कृत्रिम लगवाने के बाद भी अरुणिमा ने अपना लक्ष्य हमेशा बड़ा ही रखा । युवाओं और जीवन में किसी प्रकार के अभाव के चलते निराशापूर्ण जीवन जी रहे लोगों में उत्साह जगाने के लिए अरुणिमा ने दुनिया के सभी सात महाद्विपों की सब से ऊंची चोटियों को लांघने का कठिन लक्ष्य अपने सामने रखा । इस लक्ष्यांक में सबसे पहले उन्होंने अफ्रिका की किलिमंजारो और युरोप की एलब्रुस चोटी पर अपने देश का तिरंगा लहरा दिया है ।

अरुणिमा को लाचार और बेबस माननेवाले परिवार और रिश्तेदोरों के लिए आज वह एक मिसाल बन गई है । कृत्रिम पैर लगने के बाद अरुणिमा अगर हार मानकर लाचार होकर घर पर बैठ जाती तो पूरी जिंदगी अपने परिवार वालों के लिए बोझ बना जाती लेकिन आज पूरा परिवार उन पर गर्व महसूस कर रहा है । उनके बूलंद हौसले और आत्मविश्वास ने अरुणिमा को टूटने से बचा लिया है ।

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती, मजबूत ईरादोंवालों की कभी हार नहीं होती ।

अरुणिमा ने सिर्फ दिव्यांग लोगों के लिए ही नहीं बल्कि साधारण लोगों को भी बहुत बड़ी सीख और प्रेरणा दी है। वह कहती है कि " इंसान शरीर से विकलांग नहीं होता बल्कि मानसिकता से विकलांग होता है"। अरुणिमा विश्व से सबसे ऊंची चोटियों को फतेह करना चाहती है जिस में से चार को उन्होंने सफलतापूर्वक पार कर लिया है ।

21 मई 2013 के दिन दुनिया की सब से ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट (29028) को पार कर अरुणिमा ने मानव इतिहास के पन्नों पर अपना नाम सवर्ण अक्षरों से लिखवा दिया है । ऐसा इतिहास रचनेवाली वह पहली भारतीय दिव्यांग महिला है । अरुणिमा के इस बूलंद इरादों और सफलता ने पूरे विश्व को न केवल अचंबित किया है बल्कि एक बहुत बड़ी प्रेरणा भी दी है... सलाम है अरुणिमा के एवरेस्ट की चोटी से ऊंचे बूलंद इरादों को...

अरुणिमा अपनी सफलता पर कहती है कि-

अभी तो इस बाज की असली उड़ान बाकी है,
अभी तो इस परिंदे का इम्तिहान बाकी है
अभी अभी तो मैंने लांधा है समंदरों को,

दिव्यांगो के लिए 2022-23 के युनियन बजट में क्या था ?

भारत दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीआरपीडी) का एक हस्ताक्षरकर्ता है जो 2007 से दिव्यांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण पर केंद्रित है। और यूएनसीआरपीडी के अनुपालन के लिए देश को बाधाओं को दूर करने की जरूरत है. विशेषज्ञों के अनुसार, इसमें जागरूकता बढ़ाना, कलंक और भेदभाव को खत्म करने के साथ साथ उनके अधिकारों का एहसास करने के लिए पर्याप्त सार्वजनिक धन आवंटित करना पडेगा, जो कि एक समावेशी सरकारी बजट है। विशेषज्ञों के अनुसार, एक समावेशी बजट में सरकार की राजस्व सृजन (कर और गैर-कर स्रोतों से) और व्यय शामिल होते हैं और सभी लोगों को उनकी विविधता में लाभ होता है। इसमें अन्य लोगों के साथ-साथ दिव्यांग व्यक्ति भी शामिल हैं।

हालांकि, विशेषज्ञों ने बताया है कि भले ही कोविड-19 महामारी दिव्यांग व्यक्तियों पर भारी पड़ गई है, उनके सामने आने वाली बाधाओं को देखते हुए, उनके लिए बजट ज्यादातर पिछले तीन सालों में स्थिर रहा है। वास्तव में सकल घरेलू उत्पाद (सकल घरेलू उत्पाद) के अनुपात के रूप में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आवंटन में गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

बजट 2022-23 में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आवंटन और घोषणाएं

साल 2022-23 के लिए दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कुल आवंटन 2,172 करोड़ है जो सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 0.0084 प्रतिशत है। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में, यह 2021-22 में 0.0093 प्रतिशत से

गिर गया है। जबकि 2020-21 में सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में आवंटन रुपये के साथ 0.0097 प्रतिशत था। पीडब्ल्यूडी के लिए निर्धारित कुल राशि के रूप में 2,180 करोड़ है।

सेंटर फॉर बजट गवर्नेंस एंड एकाउंटेबिलिटी (सीबीजीए) द्वारा किए गए केंद्रीय बजट के विश्लेषण के अनुसार, दिव्यांग व्यक्तियों के लिए विशिष्ट आवंटन तीन विभागों के तहत प्रमुख रूप से प्रदान किया जाता है-

– सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के तहत दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारिता विभाग (DEPwD) को 1,212 करोड़ रुपये आवंटित किए गए जिसमें PwD के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम शामिल हैं।

– स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग से 670 करोड़ रुपये जिसमें राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (NIMHANS), लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई क्षेत्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान और राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम शामिल हैं।

– इंदिरा गांधी राष्ट्रीय निःशक्तता पेंशन योजना के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय के अंतर्गत ग्रामीण विकास विभाग की ओर से 290 करोड रुपये।

दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारिता विभाग (डीईपीडब्ल्यूडी) दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 के कार्यान्वयन, दिव्यांगों के वेलफेयर की निगरानी के लिए जिम्मेदार नोडल एजेंसी है। इसमें सभी पहचान किए गई दिव्यांगों की सहायता और पुनर्वास जरूरतों को शामिल किया गया है।

- अंधापन
- कम दृष्टि
- कुष्ठ से ठीक हुए व्यक्ति
- सुनने में परेशानी महसूस करने वाले
- लोकोमोटर दिव्यांगता
- बौनापन
- बौद्धिक दिव्यांगता
- मानसिक बिमारी
- ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिस्ऑर्डर
- सेरेब्रल पाल्सी
- मस्कुलर डिस्ट्रॉफी
- पुरानी न्यूरोलॉजिकल स्थितियां
- स्पेसिफिक लर्निंग डिसेबिलिटी
- मल्टीपल स्क्लेरोसिस
- स्पीच और लेंग्युएज डिसेबिलिटी
- थैलेसीमिया
- हीमोफीलिया
- सिकल सेल रोग

• अनेक दिव्यांगताएं जिनमें (बधिर-अंधापन, एसिड अटैक पीड़ित, पार्किंसन रोग) शामिल हैं।

डीईपीडब्ल्यूडी भारत में (यूएनसीआरपीडी) के कार्यान्वयन के लिए नोडल विभाग भी है । दिव्यांग व्यक्तियों के वेलफेयर के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए आवंटित बजट, डीईपीडब्ल्यूडी द्वारा कार्यान्वित सबसे बड़ा कार्यक्रम जिसमें दिव्यांग व्यक्तियों को सहायता और उपकरणों की खरीद / फिटिंग, दीनदयाल डिसेबिलिटी रिहैबिलिटेशन स्कीम, नेशनल ट्रस्ट सपोर्ट इंडियन स्पाइनल कोर्ड इंजरी सेंटर शामिल हैं और दिव्यांग व्यक्ति अधिनियम के कार्यान्वयन के लिए योजना 2022-23 में 635 करोड़ रुपये है । यह करीब एक करोड़ रुपये की बढ़ोतरी है । 2021-22 में आवंटन के संशोधित अनुमान 172.69 करोड़ की तुलना में 462.31 करोड़ रुपये था।

स्वायत्त निकाय जैसे नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ रिहैबिलिटेशन साइंस डिसेबिलिटी स्टडीज, रिहैबिलिटेशन काउंसिल ऑफ़ इंडिया और इंडियन साइन लैंग्वेज, रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर, सेंटर फॉर डिसेबिलिटी स्पोर्ट्स, नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर इनक्लूसिव एंड यूनिवर्सल डिज़ाइन, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेंटल हेल्थ रिहैबिलिटेशन एंड सपोर्ट टू नेशनल संस्थानों को रुपये आवंटित किए गए हैं। वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए इस आवंटन में 431 करोड़ रुपये की वृद्धि की गई है।

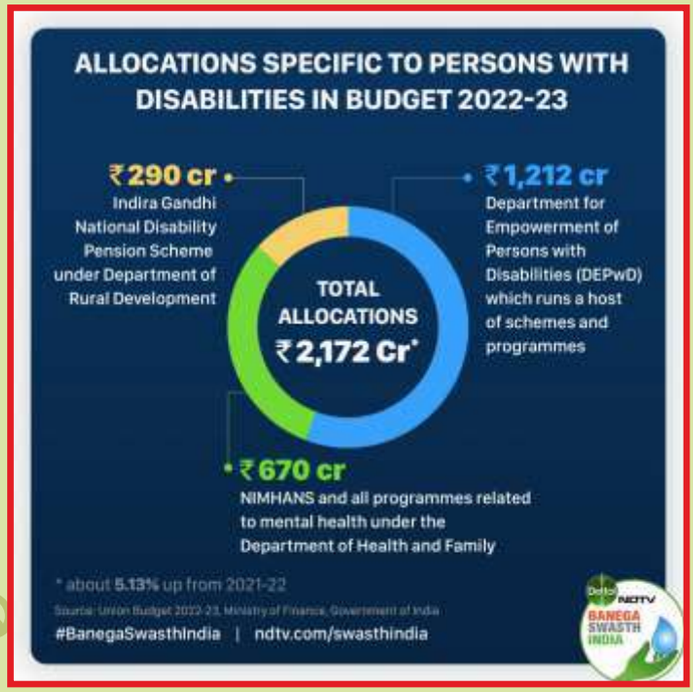

हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में आवंटन में भारी कमी आई है जिसमें भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (ALIMCO) और राष्ट्रीय दिव्यांग वित्त और विकास शामिल हैं। 2021-22 के संशोधित अनुमान में 60 करोड़ रुपए मात्र, 2022-23 के बजट अनुमान में 0.10 करोड़ ALIMCO के लिए बजट कम कर दिया गया है । एलिम्को सरकार द्वारा कई योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से वितरित किए जाने वाले उपकरणों और उपकरणों का निर्माण और आपूर्ति करती है। राष्ट्रीय विकलांग वित्त और विकास के लिए आवंटन 2021-22 के आरई में शून्य से बढ़कर बीई 2022-23 में 1 लाख हो गया है।

दिव्यांग छात्रों के लिए छात्रवृत्ति में भी लगभग रुपये की कमी देखी गई है. 2021-22 के संशोधित अनुमान में 110 जिसे घटाकर 2022-23 के बजट में 105 करोड़ है।

केंद्रीय बजट 2022-23 में दिव्यांगों से संबंधित भाषण में केवल एक विशिष्ट घोषणा थी जो आयकर अधिनियम के 80DD में संशोधन करने के लिए थी । यह दिव्यांग व्यक्तियों के माता-पिता/अभिभावकों को बीमा पॉलिसी (टर्म लाइफ इंश्योरेंस) के लिए आयकर से छूट देता है जो दिव्यांग बच्चों को उनके जीवनकाल के दौरान भी एकमुश्त राशि या वार्षिकी (हर साल भुगतान) प्रदान करता है। इससे पहले आयकर अधिनियम की धारा 80DD, माता-पिता या अभिभावक को कर कटौती के लिए प्रदान करती थी, अगर (माता-पिता या अभिभावक) की मृत्यु पर दिव्यांग व्यक्ति को एकमुश्त भुगतान या वार्षिकी उपलब्ध हो।

मीनाक्षी बालासुब्रमण्यम, संस्थापक, इक्वल्स – सेंटर फॉर प्रमोशन ऑफ सोशल जस्टिस, चेन्नई स्थित एक संगठन, जो दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों के लिए काम करता है, के अनुसार, यह एक सकारात्मक घोषणा है क्योंकि ऐसी स्थितियां हो सकती हैं जहां अलग-अलग आश्रितों को पेमेंट की जरूरत हो सकती है।

दिव्यांग व्यक्तियों से संबंधित डेटा की कमी

दिव्यांग व्यक्तियों के लिए बजट पर टिप्पणी करते हुए, मुरलीधरन विश्वनाथ, महासचिव, दिव्यांग अधिकारों के लिए राष्ट्रीय मंच (एनपीआरडी) ने कहा कि दिव्यांग व्यक्तियों के सामने आने वाली बाधाओं में अलग-अलग डेटा का अभाव है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी दुर्दशा होती है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि दिव्यांग व्यक्तियों द्वारा उठाए गए अनौपचारिक आजीविका, उनके बीच गरीबी, अपर्याप्त आवास और आश्रय, पानी और स्वच्छता सेवाएं और उनके सामने आने वाली स्वास्थ्य और पर्यावरणीय चुनौतियों पर आधिकारिक आंकड़ों की कमी है। उन्होंने जोर देकर कहा, बहुत से दिव्यांग व्यक्ति झुग्गी बस्तियों में रह रहे हैं लेकिन वे शहरी क्षेत्रों में मुश्किल से दिखाई देते हैं, ऐसा इसलिए है क्योंकि कोई पहुंच नहीं है। मलिन बस्तियों, झोंपड़ियों, सामुदायिक शौचालयों, सामान्य क्षेत्रों में कोई रैंप नहीं है, कोई जगह दिव्यांग के अनुकूल नहीं है। सरकार को दिव्यांग व्यक्तियों से संबंधित कई पहलुओं पर सर्वेक्षण करने और उचित डेटा एकत्र करने की जरूरत है।

श्री विश्वनाथ ने आगे कहा कि यूएनसीआरपीडी का अनुपालन करने के लिए प्रत्येक मंत्रालय के प्रत्येक विभाग को दिव्यांग व्यक्तियों के लिए धन समर्पित करने की जरूरत है, चाहे वह शिक्षा विभाग हो या आवास और शहरी मामलों का मंत्रालय या जल शक्ति मंत्रालय और स्पष्ट रूप से होना चाहिए। बजट दस्तावेज़ में आईटी स्पेशिफाइड करें। वर्तमान में केवल तीन विभाग पीडब्ल्यूडी के लिए आवंटित राशि को स्पेशिफाइड कर रहे हैं- दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारिता विभाग (डीईपीडब्ल्यूडी), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग (डीओएचएफडब्ल्यू) और ग्रामीण विकास विभाग।

दिव्यांग व्यक्तियों पर डेटा और दिव्यांग के लिए कई मंत्रालयों में आवंटन पर अलग-अलग डेटा के अभाव के कारण एक स्पष्ट तस्वीर सामने नहीं आती है। श्री विश्वनाथ कहते हैं, हालांकि जो बात पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती है, वह यह है कि दिव्यांगों को बुरी तरह उपेक्षित और बहिष्कृत किया जा रहा है।

दिनांक 21 जून 2022 मंगलवार को सुबह 11-00 बजे से लेकर 12-30 बजे तक विश्व योग दिन का आयोजन गायत्री परिवार नारणपुरा और पतंजलि योग समिति गुजरात के सहयोग से नवा वाडज में अखबारनगर सर्कल के पास स्थित स्मित चाइल्ड एज्युकेशन संस्थान के मनोदिव्यांग बच्चों के बीच रहकर हर्षोल्लास के साथ किया गया. गुजरात दर्दी लोक कल्याण ट्रस्ट अहमदाबाद संस्थान ने छात्रों को निःशुल्क फूलस्केप नोटबुक वितरित की. साथ ही गायत्री परिवार नारणपुरा के द्वारा सुरुचिपूर्ण भोजन की व्यवस्था की गई ।

स्कूल जाने के लिए 1 पैर से दो किलोमीटर का सफर तय करती है सिवान की प्रियांशु कुमारी, प्रियांशु को जन्म से एक पैर नहीं है... प्रियांशु डॉक्टर बनना चाहती है

इन्सान अगर चाहे तो क्या नहीं कर सकता, संस्कृत सुभाषित कहता है कि पंगु इन्सान भी हौसला होने पर हिमालय को पार कर सकता है। पर कुछ भी करने के लिए इन्सान में इच्छा शक्ति और हौसला होना बहुत ही जरुरी है । हौसला होने पर इन्सान बड़ी बड़ी मुश्किलों को भी हरा सकता है। कुछ भी करने के लिए हमेशां धन की आवश्यकता नहीं होती। इसके लिए तो इन्सान को खुद पर भरोसा रखने की और अपनो सपने साकार करने के लिए बूलंद हौसले की जरुरत होती है। बिहार के सिवान की प्रियांशु कुमारी की कहानी भी ऐसे ही आत्मविश्वास और बूलंद हौसले की बात बयां करती है । 11 साल की प्रियांशु को पढने-लिखने का इतना बूलंद हौसला है कि वह स्कूल जाने के लिए हररोज 1 पैर से 2 किलोमीटर का सफर तय करती है।

गाँव से स्कूल तक का रास्ता बहुत ही बदतर हाल में है। रास्ते की इन कठिनाइयों के बाद भी प्रियांशु कभी भी स्कूल जाना नहीं छोडती। प्रियांशु सिवान जिले के जिरादेइ के राम गाँव में रहती है। हररोज उसे एक पैर से स्कूल तक जाते हुए देखखर गांव के अन्य लोग अपने बच्चों को प्रोत्साहन देते हैं । उसका नाम लेकर उसकी तरह पढ़ाई करने के लिए बच्चों को प्रेरित करते हैं।

निजी स्कूल में पढ़ती है प्रियांशुः प्रियांशु कहती है कि इन्सान को अगर कुछ करना है तो सिर्फ सोचने से या बैठे रहने से कुछ नहीं हासिल होगा। कठिनाइयों से डर कर अपना ध्येय नहीं छोडना चाहिए। प्रियांशु अपने जीवन में अच्छी पढ़ाइ कर ड़ॉक्टर बनना चाहती है। उसके सपने बहुत बड़े है। उसने अपने लिए कृत्रिम पैर लगाने के लिए सरकार से मांग की है। स्कूल जाने के रास्ते अच्छी हालत में नहीं है। वह कहती है कि अगर मुझे कृत्रिम पैर लग जाए तो मैं अच्छे से चल पाउंगी। उसका बायाँ पैर जन्म से ही काम नहीं कर रहा है। प्रियांशु श्री राम गाँव से एक नीजि स्कूल में पाँचवी कक्षा में पढ़ाई के लिए जाती है। उसने बताया कि अपने एक पैर का संतुलन बनाकर वह हररोज दो किलोमीटर का फासला तय कर के स्कूल जाती है। मेरे स्कूल तक के रास्ते बहुत ही खराब हालत में हैं और इन्ही रास्तों पर मैं हररोज दो किलोमीटर का मुश्किल भरा सफर तय कर के मैं स्कूल पहूंचती हुँ।

प्रियांशु ड़ॉक्टर बनना चाहती है।

नीजि स्कूल में पढ़ाई कर रही प्रियांशु पढ़-लिखकर डॉक्टर बनना चाहती है। उसके स्कूल के शिक्षक कहते है कि प्रियांशु बहुत ही प्रतिभाशाली छात्र है। वह बहुत ही मेहनती लड़की है। न केवल पढ़ाई बल्कि अन्य प्रवृत्तियों में भी वह बुत अच्छा प्रदर्शन करती है।

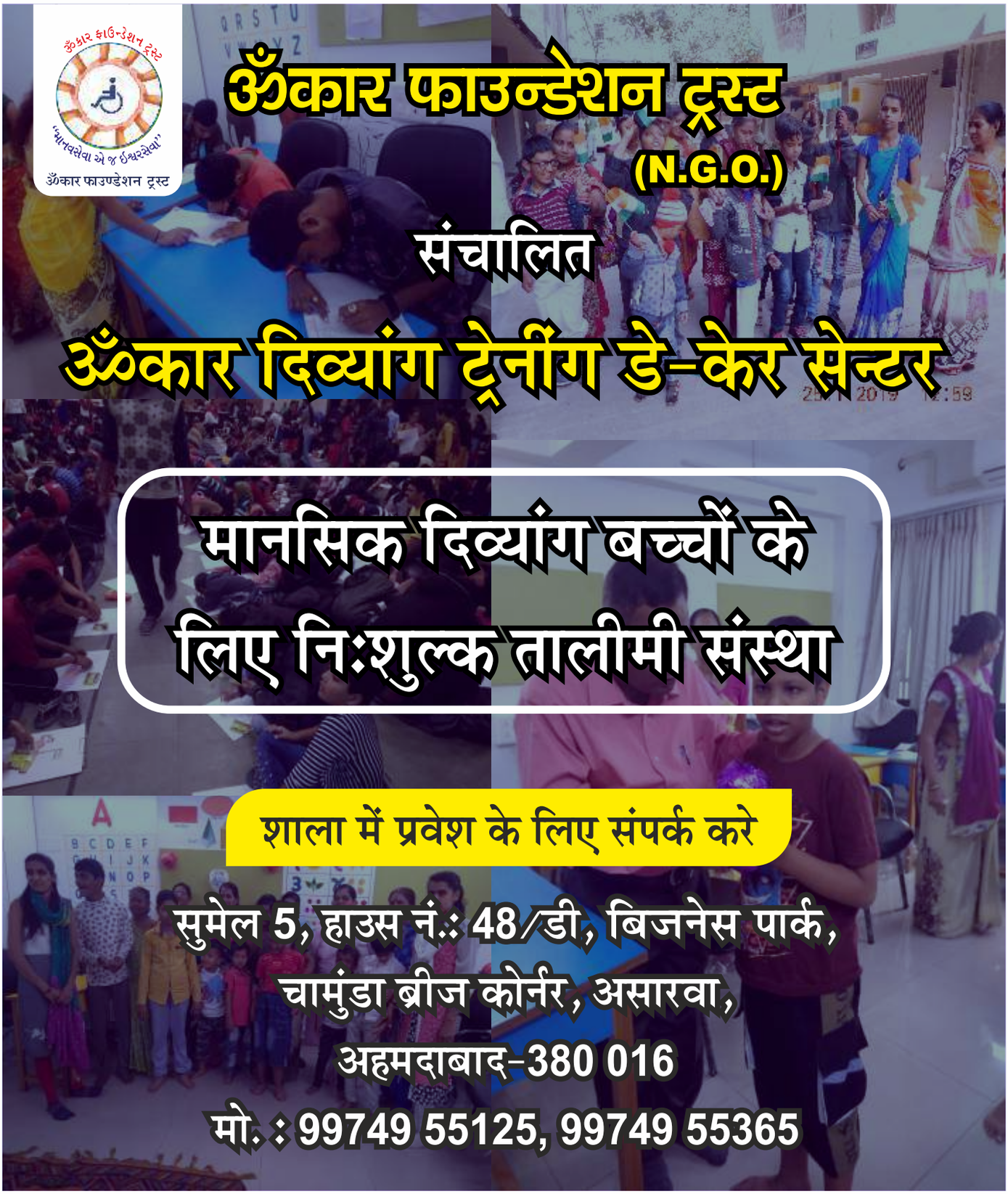

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

(N.G.O.)

संचालित

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीमी संस्था

शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करे

सुमेल 5, हाउस नं.: 48/डी, बिजनेस पार्क,
चामुंडा ब्रीज कोर्नर, असारवा,
अहमदाबाद-380 016
मो. : 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर